एक लक्ष्मी की पूजा, दूसरी का अपमान

गीता चतुर्वेदी

"यत्र नारी पूज्यंते, रमंति तत्र देवता।" जहां स्त्री की पूजा होती है वहां देवता वास करते हैं। यह शास्त्रों में कहा गया है पर क्या कोई ऐसा युग हुआ है जब इसे व्यवहार में उतारा गया हो?

हर साल दीवाली आती है। दीप जलते हैं। लक्ष्मी-पूजन भी होता है। पर घर की लक्ष्मी का...!

मेरी एक सहेली है दीपशिखा। सारा दिन घर के कामकाज में लगी रहती है। रात को जब बिस्तर पर पड़ती है तो रोम-रोम दुख रहा होता है। बदले में क्या मिलता है—डांट-फटकार, झिड़कियां, ताने-उलाहने।

दीवाली के दिन पूरा घर दीयों से सजाया गया। दीपशिखा ने लक्ष्मी पूजन की पूरी तैयारी की। बदकिस्मती से उसके हाथ से पूजा संबंधी कोई चीज़ गिर कर टूट गई। सारे घर के लोग उस पर बरस पड़े—"देखकर नहीं चला जाता। कर दिया न अपशगुन।" दीपशिखा अपमानित सी, आंसू पीकर एक ओर बैठ गई। लक्ष्मी पूजन हुआ। उसकी ओर किसी ने भी ध्यान नहीं दिया।

आखिर क्यों होता है ऐसा? जो लक्ष्मी परिवार के लिए जीती है, कुरबान होती है वह ज़रा भी सम्मान की पात्र नहीं है।

× × ×

रघुवीर जी एक अच्छे पद पर कार्यरत हैं और महिलाओं के हित की हमेशा बात करते हैं।

अभी दीवाली की ही बात है। पहले तो उन्होंने काफ़ी जमकर शराब पी। फिर दोस्तों के साथ जुआ खेलने बैठ गए। लगभग 3 हजार रुपये हार गए। घर जाकर पत्नी को जगाकर सोने की चूड़ियां मांगने लगे। जब उसने देने से इंकार किया तो खूब गाली-गलौज देकर मार-पिटाई की। बेचारी पत्नी रात भर आंसू बहाती रही। ऐसा बीता उसका दीवाली का त्यौहार।

क्या हो गया है हमारे पुरुष वर्ग को? दीपावली पर सिर्फ घर ही नहीं, मन को भी रोशन करिए। घर की लक्ष्मी का निरादर करने से क्या कोई घर सुखमय बन सकता है? □